Bhajan

09

गुरु बिन कौन सम्हारे

गुरु बिन कौन सम्हारे, को भव सागर पार उतारे ।

टूटी फूटी नाव हमारी पहुँच न पाई तट पर,
जैसे कोई प्यासा राही, भटक गया पनघट पर,
पास खड़ा गुरु मुस्काता है, दोनो बाँह पसारे,
को भवसागर पार उतारे, गुरु बिन . . .

मेरे राम मुझे शक्ति दे, मन में मेरे दृढ़ भक्ति दे,
राम काम मैं करूँ निरंतर, राम नाम चित्त धारे,
को भवसागर पार उतारे, गुरु बिन . . .

जीवन पथ की उलझन लख कर, खड़े न हो जाना तुम थक कर,
तेरा साथी, ‘रामनिरंजन , चलता साथ तुम्हारे,
को भवसागर पार उतारे, गुरु बिन . . .

दाता राम दिये ही जाता

दाता राम दिये ही जाता,
भिक्षुक मन पर नहीं अघाता ।

देने की सीमा नहीं उनकी, बुझती नहीं प्यास मेरे मन की,
उतनी ही बढ़ती है तृष्णा, जितना अमृत राम पिलाता ॥
दाता राम . . .

कहो उऋण कैसे हो पाऊँ, किस मुद्रा में मोल चुकाऊँ,
केवल तेरी महिमा गाऊँ, और मुझे कुछ भी ना आता ॥
दाता राम . . .

जब-जब तेरी महिमा गाता, जाने क्या मुझको हो जाता,
रूंधता कण्ठ, नयन भर आते, बरबस मैं गुम सुम हो जाता ॥
दाता राम . . .

प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे

प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे ।
प्रेम-भगति निज नाम दीजिये, दयाल अनुग्रह धारे ॥

सिमरौं चरन तिहारे प्रीतम, हृदय तुम्हारी आसा ।
संत जनां पै करौं बेनती, मन दरसनकौ प्यासा ॥

बिछुरन मरन, जीवन हरि मिलते, जनको दरशन दीजै ।
नाम अधार, जीवन-धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥

भज मन मेरे राम नाम

भज मन मेरे राम नाम तू गुरु आज्ञा सिर धार रे,
नाम सुनौका बैठ मुसाफ़िर जा भवसागर पार रे ॥

राम नाम मुद मंगल कारी, विघ्न हरे सब पातक हारी,
साँस साँस श्री राम सिमर मन पथ के संकट टार रे ॥
भज मन मेरे . . .

परम कृपालु सहायक है वो, बिनु कारन सुख दायक है वो,
केवल एक उसी के आगे, साधक बाहँ पसार रे ॥
भज मन मेरे . . .

गहन अंधेरा चहुँ दिश छाया, पग पग भरमाती है माया,
जीवन पथ आलोकित कर ले, नाम-सुदीपक बार रे ॥
भज मन मेरे . . .

सर्वेश्वर है, परमेश्वर है, ‘नामप्रकाश पुन्य निर्झर है ,
मन की जोत जला ले इससे, चहुँ दिश कर उजियार रे ॥
भज मन मेरे . . .

ऐसो को उदार जग माहीं

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ॥

जो गति जोग बिराग जतन करि, नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी ॥

जो संपति दस सीस अरपि करि, रावन सिव पहँ लीन्ही ।
सो संपदा बिभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्ही ॥

तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करहिं कृपानिधि तेरो ॥

अंजनि सुत हे पवन दुलारे

अंजनि सुत हे पवन दुलारे हनुमत लाल राम के प्यारे ।

अतुलित बल पूरित तव गाता अशरन शरन जगत विख्याता,
हम बालक हैं शरन तुम्हारे दया करो हे पवन दुलारे ॥
अंजनि सुत हे पवन दुलारे . . .

संकट मोचन हे दुख भंजन धीर वीर गम्भीर निरंजन,
हरहु कृपा करि कष्ट हमारे दया करो हे पवन दुलारे ॥
अंजनि सुत हे पवन दुलारे . . .

राम दूत सेवक अनुगामी विद्या बुद्धि शक्ति के दानी,
शुद्ध करो सब कर्म हमारे दया करो हे पवन दुलारे ॥
अंजनि सुत हे पवन दुलारे . . .

राम दो निज चरणों में स्थान

राम दो निज चरणों में स्थान शरणागत अपना जन जान।

अधमाधम मैं पतित पुरातन, साधन हीन निराश दुखी मन,
अंधकार में भटक रहा हूँ, राह दिखाओ अंगुली थाम ॥
राम दो . . .

सर्वशक्तिमय रामजपूँ मैं , दिव्य शांति आनन्द छकूँ मैं,
सिमरन करूँ निरंतर प्रभु मैं, राम नाम मुद मंगल धाम ॥
राम दो . . .

केवल राम नाम ही जानूं, और धर्म, मत ना पहिचानूं,
जो गुरु मंत्र दिया सतगुरु ने, उसमें है सबका कल्याण ॥
राम दो . . .

हनुमत जैसा अतुलित बल दो, पर-सेवा का भाव प्रबल दो,
बुद्धि विवेक शक्ति इतनी दो, पूरा करूँ राम का काम ॥
राम दो . . .

राम राम काहे ना बोल

राम राम काहे ना बोल, व्याकुल मन जब इत उत डोले ।

लाख चौरासी भुगत के आया, बड़े भाग मानुष तन पाया,
अवसर मिला अमोलक तुझको, जनम जनम के अघ अब धो ले ॥
राम राम . . .

राम जाप से धीरज आवै, मन की चंचलता मिट जावै,
परमानन्द ह्लदय बस जावै, यदि तू एक राम का हो ले ॥
राम राम . . .

इधर उधर की बात छोड़ अब, राम नाम से प्रीति जोड़ अब,
राम धाम में स्वागत करने, श्री गुरुदेव खड़े, पट खोले ॥
राम राम . . .

पायो निधि राम नाम

पायो निधि राम नाम, सकल शांति सुख निधान ।

सिमरन से पीर हरे, काम, क्रोध, मोह जरे,
आनन्द रस अजर झरे, होवे मन पूर्ण काम ॥
पायो निधि . . .

रोम रोम बसत राम, जन जन में लखत राम,
सर्व व्याप्त ब्रह्म राम, सर्व शक्तिमान राम ॥
पायो निधि . . .

ज्ञान ध्यान भजन राम, पाप ताप हरन नाम,
सुविचारित तथ्य एक, आदि अंत राम राम ॥
पायो निधि . . .

अब कृपा करो श्री राम नाथ दुख टारो

अब कृपा करो श्री राम नाथ दुख टारो,
इस भव बंधन के भय से हमें उबारो ।

तुम कृपा सिन्धु रघुनाथ, नाथ हो मेरे,
मैं अधम पड़ा हूँ, चरण कमल पर तेरे,
हे नाथ, तनिक तो हमरी ओर निहारो ॥
अब कृपा करो . . .

मैं पंगु, दीन हौं, छीन हीन, तुम दाता
अब तुम्हें छोड़ कित जाउं, तुम्हीं पितु माता,
मैं गिर न कहीं प्रभु जाऊँ, आय सम्हारो ॥
अब कृपा करो . . .

मन काम क्रोध मद लोभ मांहि है अटका,
मम जीव आज लगि लाख योनि है भटका,
अब आवागमन छुड़ाय नाथ मोहि तारो ॥
अब कृपा करो . . .

धुन -- पाया पाया मैनें राम रतन धन पाया
राम रतन धन पाया मैनें राम रतन धन पाया